अध्याय – 3
शोध प्रविधि

3.1 प्रस्तावना

अनुसंधान कार्य में सही दिशा में अग्रसर होने के उद्देश्य से यह आवश्यक होता है, कि शोध प्रबंधन का व्यवस्थित अभिकल्प या रूपरेखा तैयार की जाये, क्योंकि यही रूपरेखा ही शोध को एक निश्चित दिशा प्रदान करता है। इसमें प्रतिदर्श के चयन की अपनी विशेष भूमिका होती है। प्रतिदर्श जितने अधिक सुदृढ़ होंगे शोध के परिणाम भी उतने ही विश्वसनीय व परिशुद्व होंगे।

3.2 शोध की पद्वति

अनुसंधान विधि उचित तरीके से अनुसंधान करने का विज्ञान है, और यह वैज्ञानिक और निशपक्ष रूप से समस्या को हल करने के लिए एक तरीका सुझाता है। यह प्रक्रिया एक प्रतिरूप है, जो शोध करता को अध्ययन के विभिन्न चरणों से अवगत कराता है।

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। जिसके द्वारा अनुसंधान विधि में पूरी प्रक्रिया शामिल है, अनुसंधान का संचालन करना, निष्कर्ष निकालना और निष्कर्षों का प्रचार करना, विभिन्न अनुसंधान विधियों और विशेष के चयन के लिए वैज्ञानिक कारण प्रदान करता है। एक शोध समस्या को हल करने की विधि यह निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। परिणामों की उपयोगिता व सामान्यीकरण अनुसंधान पद्वति जनसंख्या की पहचान करने, प्रतिदर्श को परिभाषित करने, चयन करने के बारे में दिशा और समझ देती है। आँकड़े प्राप्त करने के लिए उपयोग की जाने वाली उचित तकनीकें, उपकरण एवं आँकड़ों के विश्लेषण और व्याख्या के लिए सांख्यिकीय तकनीकि का चयन।

3.3 जनसंख्या

भोपाल जिले के प्राथमिक शासकीय विद्यालय में अध्ययन कर रहे छात्र इस अध्ययन की जनसंख्या हैं।

3.4 न्यादर्श का चयन

न्यादर्श से तात्पर्य पूरे समूहों में चुनी गई कुछ इकाइयों का समूह है। न्यादर्श के चयन करने हेतु अन्वेषक द्वारा भोपल जिले में संचालित प्राथमिक स्तर के शासकीय विद्यालयों की सूची बनाई गई। जिसमें 3 शासकीय प्राथमिक विद्यालय एवं 1 शासकीय हाई स्कूल का चयन किया गया। चयनित विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं का चयन किया गया है।

3.5 न्यादर्श चयन पद्वति

शोध अध्ययन के लिए शासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं में सर्वेक्षण विधि प्रयोग में लाई गई, जिसके अर्न्तगत संरचना डिजाइन किया गया और इसमें अन्वेषक द्वारा स्वंय निर्मित उपकरणों का उपयोग करके आंकड़ों को एकत्रित किया गया है।

तालिका क्रं 3.1

.विद्यालय का विवरण

क्रं	विद्यालय का नाम	स्थान का नाम
1	शासकीय प्राथमिक शाला	इनायतपुर कोलार रोड भोपाल
2	शासकीय प्राथमिक शाला	गेंहूँखेड़ा कोलार रोड भोपाल
3	शासकीय प्राथमिक शाला	कालापानी कोलार रोड भोपाल
4	शासकीय हाईस्कूल शाला	बैरागढ़ चीचली कोलार रोड भोपाल

तालिका क्रं 3.2

न्यादर्श का विवरण

क्रं	विद्यालय का नाम	छात्र	छात्रा	कुल संख्या
1	शासकीय प्राथमिक शाला इनायतपुर कोलार	02	05	07
2	शासकीय प्राथमिक शाला गेंहूँखेड़ा कोलार	09	05	14
3	शासकीय प्राथमिक शाला कालापानी कोलार	08	07	15
4	शासकीय हाईस्कूल शाला बैरागढ़ चीचली कोलार	11	09	20
	कुल संख्या	**30**	**26**	**56**

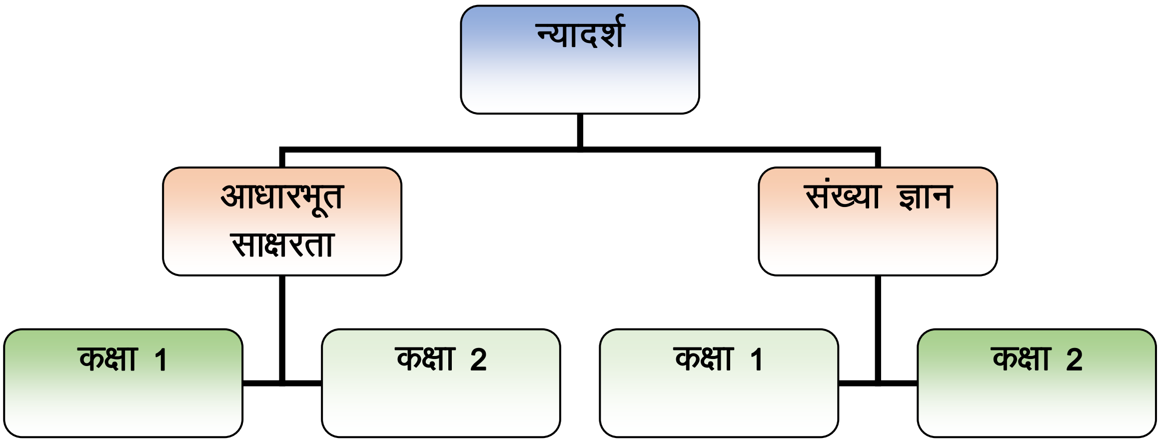

चित्र क्रंमाक 3.1: न्यादर्श का चयन

3.6 उपकरण

अन्वेषक ने प्रशिक्षण की विशेषता को ध्यान में रखकर अपने शोध हेतु उपयुक्त उपकरणों का चुनाव किया है।

जिससे अन्वेषक द्वारा लिया गया परिणाम उपयोगी हो सकेगा, प्रस्तुत छात्रों के आँकड़ों के संग्रहण हेतु उपकरण।

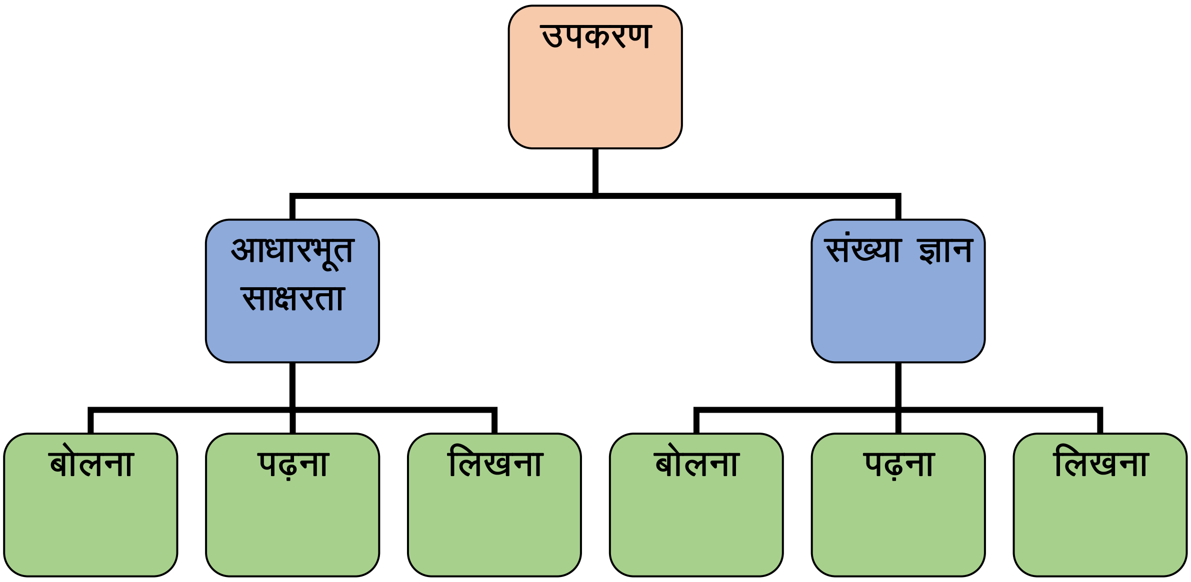

चित्र क्रंमाक 3.2: उपकरण का चयन

3.6.1 आधारभूत साक्षरता के लिए उपयोग किये गये उपकरण

- **बोलना** – अन्वेषक के द्वारा अक्षर कैलेण्डर का उपयोग किया गया जो बच्चों की बोलने की समझ को दर्शाता है। जो आँकड़ों के संग्रहण के लिये उपयोगी रहा।
- **पढ़ना** – बिना मात्रा वाले शब्द एवं मात्रा वाले शब्द जो अन्वेषक के द्वारा अलग–अलग कक्षाओं में पठन के लिए स्वंय निर्मित किया गया।
- **लिखना** – अन्वेषक के द्वारा लेखन के लिए स्वंय निर्मित किये गये उपकरणों का उपयोग किया गया।

3.6.2 संख्या ज्ञान के लिए उपयोग किये गये उपकरण

- **बोलना** – अन्वेषक के द्वारा संख्या कैलेण्डर का उपयोग किया गया जो बच्चों की बोलने की समझ को दर्शाता है। जो आँकड़ों के संग्रहण के लिए उपयोगी रहा।
- **पढ़ना** – संख्या कैलेण्डर एवं पहाड़े का कैलेण्डर बच्चों को पढ़वाने के लिए उपयोग किया गया कि बच्चे समझ के साथ पढ़ रहे हैं या नहीं।
- **लिखना** – लेखन के लिए अन्वेषक के द्वारा स्वंय निर्मित किये गये उपकरणों का उपयोग किया गया।

3.7 प्रदत्तों का संकलन

प्रदत्तों के संग्रहण हेतु अन्वेषक ने क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान से अनुमति पत्र प्राप्त किया। इसके बाद अन्वेषक ने चयनित विद्यालयों में जाकर शाला प्रभारी एवं प्राचार्य से मिलकर अपना परिचय दिया और अपने आने का उद्देश्य बताकर लघु शोध प्रबंध के विषय में निवेदन करते हुये सम्पूर्ण जानकारी से अवगत कराया। अन्वेषक ने प्रत्येक प्राथमिक विद्यालय में निर्धारित तिथि स्थान समय पर विद्यालय में जाकर शोध अध्ययन किया। जिसमें अन्वेषक के स्वंय निर्धारित उपकरणों के माध्यम से छात्रों से प्रदत्त संग्रह किया गया। इस प्रकार के प्रदत्तों के संग्रह में 7 से 8 दिन का समय लगा।

लघु शोध प्रबंध में अन्वेषक ने शोध से संबंधित आँकड़ों का संकलन करने के लिए मध्यप्रदेश के भोपाल जिले के विद्यालयों का चुनाव किया प्रदत्त संकलन के लिए अध्यापकों को जानकारी दी गयी। तथा उपकरण के निर्देशन के बारे में सूचना प्रदान की गई। इस प्रकार प्रदत्तों का संग्रह किया गया।

3.7 प्रदत्तों का विश्लेषण

शोध के द्वारा प्राप्त प्रदत्त तब तक अर्थपूर्ण नहीं होते हैं, जब तक कि कुछ सांख्यिकीय विश्लेषण नहीं दिया जाता है। प्रदत्तों के विश्लेषण का अर्थ प्राप्त करने के लिए और प्रदत्तों को अर्थपूर्ण बनाने के लिए सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा उपयुक्त परिणाम प्राप्त करना है। प्रदत्तों का विश्लेषण करने में अन्वेषक ने छात्रों द्वारा प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु साधारण सांख्यिकीय विश्लेषण का प्रयोग किया।